कला का नवीन रूप प्रभाववाद

*डॉ. उमेश कुमार सिद्ध

सारांश

यूरोपीय चित्रकला का विकास क्रम जिस रूप में प्राप्त है। उसमें प्रभाववाद की स्थिति शास्त्रीय पुर्नोत्थान तथा अभिव्यंजनावाद की मध्यवर्ती है। प्रभाववाद का आरम्भ चित्र कला के इतिहास में आधुनिक चित्रकला का आरम्भ माना जाता है। वैसे तो इससे पहले भी कला क्षेत्र का प्रयोग प्रारम्भ हो चुके थे किन्तु उनमें विशेषताओं का अभाव था। प्रभाववाद ही प्रथम और विशिष्ट वाद के रूप में आता है।

''एक केन्द्रिय बिन्दु से दृष्टि को उड़ती नजर में एक साथ देखकर उसका फुर्ती से आभास चित्र में उतार देना ही प्रभाववाद का अर्थ है।''

जिस समय प्रभावादी कलाकारों ने एक दल के रूप में कार्य करना शुरू किया। इस समय उनका कोई एक लक्ष्य नही था। इसलिये उन्होंने अपने दल का नाम प्रभाववाद रखा।

प्रभाववाद का नामकरण इस समय के कलाकारों द्वारा किया हुआ नहीं है। इन कलाकारों ने 1874 में प्रथम प्रदर्शनी नाडार फोटो सेलून में की जिसमें मोने पिसारों, रिनोअर, सिसले, सेजां, देगास, हेनरी रूएर्ड आदि ने भाग लिया। इस प्रदर्शनी को देखकर पत्रकारों ने निदा द्योतक शब्दों में इस शब्द का प्रयोग किया, बस उसी समय इस प्रवृत्ति पर आधारित चित्रों को प्रभावादी पद्वति के अन्तर्गत माने जाने लगा। यह शब्द मोने की प्रविष्टि इम्प्रैशनः राइजिंग सन "Empretion resing sun" शीर्षक पर आधारित था। इन कलाकारों के लिये कोई शैली अथवा एक चित्रण विधि ही सब कुछ नहीं होती। सर्वथा किसी नवीन उपलब्धि की खोज में लगे रहते है। सर विलियम उपौरफन के अनुसार ''इस नवीन तकनीक का उद्भव एवं विकास किसी एक चित्रकार ने नहीं किया था। बल्कि चित्रकारों के पूरे एक वर्ग के सतत् अध्ययन एवं प्रयास का बलिदान था।''

इस प्रथम प्रदर्शनी को देखकर परम्परावादी, आलोचकों, प्राचीन शैली के पोषकों तथा कला मर्मज्ञों ने अरूचि प्रगट की किन्तु क्रान्तिकारी विचारकों और युवक कलाकारों ने इसकी प्रशंसा की। प्रभाववादी कला आंदोलन के प्रारम्भिक चिन्ह ''माने'' की कलाकृति में दिखाई देते है। इसने जिन रंग–रूपों तथा विषयों का अंकन किया था अन्य प्रभावादी कलाकारों की रूचि भी उन्हीं की ओर आकर्षित हुई। इन कलाकारों ने रंगों का विश्लेषणात्मक अध्ययन किया। काले और भूरे रंगों का प्रयोग छोड़ दिया। शुद्ध रंगों द्वारा ही छाया प्रकाश को अंकित किया। अमिश्रित रंगों का प्रयोग किया। यह तथ्य भी प्रगट हुआ कि समस्त रंग एक–दूसरे को प्रभावित करते हैं। अतः रंग पैल्ट पर मिश्रित न करके सीधे चित्र में पास–पास लगाकर दूसरे रंग के प्रभाव उत्पन्न किये। जिससे रंगो का मिश्रण दर्शक की दृष्टि से ही होता है। स्टूडिया के मोह को छोड़कर खुले वातावरण में चित्रण किया। विषय वस्तु एवं आकार को उतना महत्त्व नहीं दिया जितना प्रभाव एवं अंकन प्रणाली को। तूलिका छापों एवं नाईफ के द्वारा रंगों का प्रयोग किया।

वस्तुओं के पड़े हुये शीघ्र प्रभावों की अभिव्यक्ति की। बाह्य रेखाओं का बहिष्कार किया। पुराने कथानकों को देवी, देवताओ, राष्ट्रीय महापुरूषों के चरित्रों, ऐतिहासिक घटनाओं आदि का अंकन छोड़ दिया गया। इनके स्थान पर दैनिक जीवन से सम्बन्धित चित्र बनाए। अधिकतर प्राकृतिक दृश्य, स्थिर जीवन, आवारा व्यक्तियों, शराबियों, मध्य एवं निम्न वर्णीय व्यवसायी एवं कारीगरों और कलाकारों का ही चित्रण किया।

1874 से लेकर 1886 तक इन्होंने 8 प्रदर्शनियाँ की किन्तु अन्तिम प्रदर्शनी होते–होते एक संगठन के रूप में कलाकार अपनी एकता खो चुके थे तथा पूर्ण रूप से विश्रृंखल हो गये थे। ब्लिाक्रो कहा करता था कि "Speakign Readycaly there Nither Lights and shades, there is a colour mass for each object having different reflerons of all sides"

प्रभाववाद के प्रमुख कलाकार

1. Edouard Manet (1832-1883) माने

माने को प्रभाववादी कला का प्रर्वतक कहा जाता है किन्तु यदि उनके चित्रों को निकट से देखा जाये तो ऐसा लगता है मानो प्रभाववाद का उसने खुलकर विरोध किया है। माने का पेरिस के एक सम्पन्न परिवार में जन्म हुआ था अतः उसे समाज के उच्च वर्ग तथा प्रतिष्ठित लोगों में बैठने की सुविधा थी। मंजे हुऐ रहन–सहन आदि के कारण भी उसका व्यक्तित्व निराला था। उसके आरम्भिक चित्रों में विविधता है। वह रूढ़िवादी होते हुये भी भावुक था। उसमें प्रबल आवेश था जिससे वह शीघ्र ही क्रांति की बातें करने लगता था। अकादमी के सैलून में उसके चित्र प्रतिवर्ष अस्वीकृत होते रहे और वह प्रतिवर्ष वहाँ चित्र भेजने की जिद में अड़ा रहा। अस्वीकृत कलाकारों के सैलून के साथ भी उसे क्रर अनुभव हुये। फलतः उसने प्रभाववादी चित्रों की स्वतन्त्र प्रदर्शनियों में भी भाग नहीं लिया। 1867 में विश्व मेले में अपना एक स्वतंत्र मण्डप बनाया और अपने चित्रों को प्रदर्शित किया। किन्तु इसका परिणाम निराशाजनक ही रहा। उनकी मृत्युपर्यन्त अनेक संस्थाओं के माध्यम से अपने चित्र प्रस्तुत किये तथा पुरस्कार प्राप्त करने का प्रयत्न किया। 20 वर्ष तक असफल रहने के पश्चात् अपनी मृत्यु के एक वर्ष पूर्व वह सफल हुआ।

अपने प्रयासों से युक्त माने की स्वतन्त्रता आरम्भिक चित्रों में ही दिखाई दे जाती है। वह सदैव नवीन उपलब्धियाँ चाहता था। अपने शिक्षक के प्रभाव के कारण उसने श्वेत तथा काले बालों, तेज प्रकाश एवं छाया के विरोधी और गाढ़े रंगों का प्रयोग किया है। समकालीन विषयों के आधार पर माने ने अपने पहला चित्र 1859 में बनाया जिसमें फटे कपड़ों में एक शराबी को चित्रित किया गया है। इस चित्र की बहुत आलोचना हुयी और सैलून में प्रदर्शन करने के लिये अस्वीकृत कर दिया गया। यहीं से चित्रकार और समाज के मध्य झगड़े आरम्भ हुये।

गोया, मियुरिलों और वैलासकेस उसके पथ प्रदर्शक कलाकार थे। परिणामस्वरू माने ने एक नयी पद्धति को जन्म दिया जिसमें प्रभाववाद और यथार्थवाद का सम्मिश्रण था। अतः हम माने को प्रभाववादी कलाकारों में प्रभाववीद कम और परम्परावादी अधिक पाते है। उसने अन्य लोगों की तरह प्रकाश के विभिन्न परिवर्तन पर ध्यान नहीं दिया। उसने अंधेरी पृष्ठभूमि पर आकृतियों को सपाट रूप से प्रदर्शित किया है। उसने कुछ ऐसे विवादास्प्रद चित्रों को जन्म दिया जिन्होंने बरबस दर्शकों को अपनी ओर आकर्षित किया विवादास्पद प्रणाली का उदाहरण है। चित्र में तकनीकी पक्ष पृष्ठ भूमि में भोजन का सामान तथा इन सबसे रूढ़िगत प्रकार का ही बोध होता है। इसका एक चित्र और उदाहरण के लिये प्रस्तुत किया जा सकता है। जिसमें शीर्षक तो शास्त्री पद्वति का है। किन्तु उसमें एक ''सदा सुहागन स्त्री'' का इस चित्र का शीर्षक ''औलम्पिया'' है। इसमें अलंकारिक प्रतिभा और सपाट रंगों का प्रयोग है। टिशियन कृति ''उर्विनों की वीनस'' नामक चित्र के संयोजन का सहारा लिया है।

स्पेन यात्रा से माने का स्पैनिश कला के रहस्यों का ज्ञान हुआ। यद्यपि 1862 से हीवह समकालीन जीवन का चित्रण करने में लगा था। तथापि स्पेन से लौटने के उपरान्त वह बाह्य दृश्यों के चित्रण में अधिक रूचि लेने लगा। उसने घुड़दौड़, सागर तट, बन्दरगाह तथा सागरीय बस्तिया के चित्र बनाने शुरू किये। उसकी तूलिका चलाने की विधि अब अधिक स्वतंत्र और विविध हो गयी। उस पर प्रभाववादियों के संसर्ग का भी प्रभाव पड़ा।

1872 में माने ने प्रभाववादियों के प्रभाव में नमक एक विशाल बाह्य दृश्यों की सूचना की। उसने यद्यपि बहुत चमकदार रंगों का प्रयोग किया था। तथापि रिनौर्ड तथा मोने के समान उज्जवल नहीं थे। फिर भी उसमें तूलिका के कार्य बड़ा सशक्त था। 1871 में माने 23चित्र 3500रूपयों में फ्रांस के एक व्यापारी ने खरीदे। इससे माने की प्रतिष्ठा बहुत बढ़ गयी। 1877 ई. में माने ने 'नाना' चित्र अंकित किया।

यह चित्र भी अपनी अस्पष्टता के कारण तिस्कृत हुआ। इसका केवल एक चित्र ही इस युग में आशंसित हो सका जिसमें फासहौन की पद्धति से एक व्यक्ति को शराब का गिलास पकड़े अंकित किया गया था चित्र की विश्राम मुद्रा एवं किंचित भूरें रंग योजना की बहुत प्रशंसा हुई। यह घटना 1872 की है। इसके पहले और बाद के वर्षो में उसकी कब हमेशा आलोचना का विषय रही है। अपने जीवन के अन्तिम दिनों में वह जाने तथा अन्य प्रभाववादी कलाकार के अमिश्रित रंग के सिद्वांत के अधिकाधिक समीप आ गया।

इससे वह स्वयं को बहुत स्वतंत्र समझने लगा। वह मानप्रकृति के चित्रण में एक सन्तोष के अनुभव करता था। यह प्रकृति प्रभावदियों में नहीं थी। मृत्यु से एक वर्ष पूर्व 1882 में उसने अपना सर्वाधिक आवैशित भ। चंतवज थ्वसपमे ठमहमतम''सैलून में प्रदर्शित किया। औलम्पियत चित्र के समान इस चित्र में भी मान ने दर्शकों को चित्र के विषय के साथ सम्बन्धित कर दिया। माने के बाद के चित्रों में विशेष रूप से ''दर्पण युक्त आहरिकाओं में सत्य विषयों को चित्रण मिलता है। इन्हीं कलाकृतियों ने माने को इस समयका प्रमुख कलाकार बना दिया तथा इस वाद का संस्थापक भी।

2. Claude, Monet क्लूड मोने (1832-1883)

मोने प्रभाववादी धारा के प्रवर्तकों में से एक है। एक बार इसके बारे में सेजां ने यह कहा था कि ''मोने की दृष्टि आश्चर्यजनक है'' और यह सत्य भी था कि उसके पास केवल दृष्टि ही थी। प्रभाववादी कलाकार प्रकृत्ति के चितेरे तो थे ही, मोने भी प्रकृति के चित्रण में अधिक रूचिवान था परन्तु यह सबसे अलग था। यह प्रकृति के क्षण–क्षण बदलते वातावरण को देखकर उसका चित्रांकन करता था। इसमें यह विशेषता थी कि यह अनेक विषयों को लेकर बैठता था, फिर एक तब तक कार्य करता था जब तक कि सूर्य काफी ऊपर न चढ़ आये। इसके पश्चात् दूसरे पर और फिर तीसरे पर उसी दृश्य के परिवर्तित वातावरण को चित्रित करता रहता था। इस प्रकार एक ही विषय पर उसके बने कई चित्र मिलते है। उदाहरण के लिये प्रकाश की विभिन्न अवस्थाओं में ''घास के ढेरों'' के चित्र बड़े प्रभावशाली और आकर्षक है।

मोने ने तकनीकी दृष्टि से प्रभाववाद को नवीनता प्रदान की। अन्य कलाकारों ने भी इन नवीन तकनीकों को अनुसरण किया। 1870 में मोने इंग्लैण्ड चला गया, वहाँ उसने टरनर की कार्य पद्धति का अवलोकन किया। और उससे बहुत प्रभावित भी हुआ। मुख्य विषयों के चयन में मोने बहुत सिद्धहस्त था। उसने कुछ इस प्रकार के विषय चुने–वन, पीपल का वृक्ष जिसकी वायु में कॉपती हुई तथा धूप में चमकती हुई पत्तियों पर प्रकाश को प्रतिबिम्बित करने के गुण एवं विचित्र भिन्नताएँ मिलीती है। रेलवे स्टेशनों के विशाल शैड्स जिसमें भाप के कारण अस्पष्टता आ जाती है। पुष्प चयन करती हुई स्त्रियों से युक्त चमचमाते हुए खेत आदि। कोहरे से युक्त लंदन का धुँधला वातावरण तथा सील नदी पर पेरिस की छटा जैसे विषय मोने तथा इसके तत्कालीन अनुयायियों के प्रिय विषय थे।

3. Renoir रिनॉयर (1841-1919)

प्रभाववादी चित्रकारों में रिनॉयर का भी प्रमुख स्थान है। प्रभाववादियों के दल में सर्वाधिक सफल और लोकप्रिय कलाकार सिद्ध हुआ। इसने अपनी 13 वर्ष की अवस्था से ही सम्बन्धी कार्य शुरू कर दिया था। इसकी प्रारम्भिक शिक्षा मिट्टी के बने बर्तनों पर पेंटिंग करने और आलेखन बनाने से हुई। यहीं से प्रभाववाद की ओर इसका रूझान हुआ और यह निरन्तर इसकी ओर प्रगति करता गया। इसने माने की पद्धति और मानवाकृतियों में अपनी रूचि का समन्वय किया। मानवाकृतियों को उसने भव्य संयोजनों में अंकित किया है। इनके रंगों में पारदर्शिता और चमक बहुत अधिक है। चमकदार प्रकाश में नहाई हुई उसकी आकृतियों में यौवन तथा उत्साह है। रेनॉयर ने मोने के साथ प्रभाववादी कला आंदोलन का नेतृत्व भी किया। अपने साथियों के समान रेनॉयर ने भी भूरे और रूपहले रंगों का बहिष्कार किया। इनके स्थान पर उसने परछाइयों में बैंगनी अथवा गहरे नीले रंगों का प्रयोग किया। चमकीली धूप में दिखाई देने वाले लाल, नीले, पीले तथा हरे रंगों का प्रयोग किया। उसने बाह्य वातावरण को ही चित्रित करने का प्रयत्न किया जहाँ सर्वाधिक समृद्ध रंग दिखाई देते है। रेनॉयन की प्रारम्भिक कृतियों में कूर्वे की कला का प्रभाव दिखाई देता है। इसने मोने के साथ मिलकर भी कार्य किया है। मोने के प्रभाव में आकर इसकी पैलेट पर रंगों का क्रम बदल गया। इसने प्रदर्शनियों का आयोजन भी किया। रेनॉयर लंदन, होर्लेड, स्पेन, जर्मनी आदि देशों के संग्रहालयों में अध्ययन की दृष्टि से गया और वहाँ से रैफिल तथा वैलेसक्वेज से प्रभावित होकर लौटा। इसने धूप में चमकते फूलों, प्राकृतिक दृश्यों, नग्न सुन्दरियों एवं व्यक्तियों के अनेक चित्र अंकित किए और उसे यश भी मिला। प्रारम्भिक कृतियों में, आकृति दृश्य, भू–दृश्य चित्र, मदिरालयों में आकृतियों के झुंड, नृत्य शालाएँ और नदी के किनारे आदि दिखाई पड़ते है। कालातीत में बनाये गए इनके अधिकाशं चित्र नग्न आकृतियों से तथा अर्धनग्न आकृतियों से पूर्ण है। अंतिम वर्षों में वह मोने से प्रभावित हुए जो कि उनके आस–पास ही रहते थे।

अतः वह जंगलवाद (फौविज्म) के अन्तर्गत निहित विचारों से प्रदर्शनी करने लगे। उसने अपने जीवन में 6000 हजार कृतियों को जीवन प्रदान किया जिनमें से अधिकाशं आज भी संग्रहालयों में जीवित अवस्था में संग्रहित है।

4. Edgar Degas देगाज (1837-1917)

देगा का जन्म पैरिस में हुआ था। इसने ईन्ग्रे के एक अनुयायी चित्रकार की देख–रेख में दीक्षा ग्रहण की थी। देगा के प्रारम्भिक चित्रों में पारिवारिक आकृति चित्र और कुछ इतिहास सम्बन्धी विषयों का अंकन भी मिलता है। आगे चलकर सम्भवतः इसने मोने से प्रभावित होकर धर्मात्मक बेढ़गे कॉम्पोजीशन करने आरम्भ किए। इसने प्रभाववादियों के साथ अपने चित्र प्रदर्शित किए जिनसे उसकी बहुत ख्याति हुई।

देगा की प्रेरणा समस्त प्रभाववादी आन्दोलन के पीछ जबरदस्त कार्य करती रही है। वह 1874 एवं 1886 ई. के मध्य प्रभावादियों की चित्र प्रदर्शनियाँ आयोजित कराने में विशेषतः प्रयत्नशील रहा था फिर भी उसे पूरी तरह प्रभाववादी नहीं कहा जा सकता। वह शास्त्रीय रेखांकन का आदर करता था और प्राकृतिक दृश्य का अभिप्राय के रूप में विशेष रूप में अंकित करने में रूचि भी नहीं रखता था।

वह जीवन भर मानवाकृति को उनके वातावरण में विशेष रूप में अपने व्यवसाय में संलग्न चित्रित करता रहा। कट्टर प्रभाववादियों में माने, मोने रिनॉयर, सिसलो तथा पिसारो का नाम लिया जा सकता है। 1872 के उपरांत माने को भी इस दल के साथ रखा जा सकता है। पेस्टल रंगों में सहज रूप से अंकन की विधि का विकास करके देगा ने भी उनसे सहानुभूति प्रदर्शित की। इसने दिन के प्रकाश के स्थान पर आकृतियों की गति का चित्रण किया। वास्तव में वह विशुद्ध प्रभाववादी होने की अपेक्षा एक मनोवैज्ञानिक प्रभाववादी अधिक था क्योंकि उसके लिए प्रकृति के अर्थ में मानवी प्रकृति भी सम्मिलित थी।

देगा रंगशाला से बाहर जाने को कभी तैयार नहीं हुआ। वह बाहर से खाके बना कर ले आता था। फिर उनकों रंगशाला में बैठकर विशाल चित्रों का रूप दे डालता था। पूर्वी कला से प्रभावित होकर उसने अधिकतर विशिष्ट प्रकार के दृश्यों को चित्रित किया। जैसे, धन, का लेन–देन करने वाले भवन लियुआरलिअंश में रूई का बाजार तथा इसने अन्य चित्रों में नृत्यांगनाएँ अधिक बनाई है।

***प्राचार्य**
अपेक्स कॉलेज मकराना
जिला नागौर (राज.)

संदर्भ सूची

1. सांस्कृति राजस्थान, सम्पादन रतनशाह, 1989 पृ 158
2. सांस्कृति राजस्थान, सम्पादन रतनशाह, 1989 पृ 158–159
3. सांस्कृति राजस्थान, सम्पादन रतनशाह, 1989 पृ 159
4. सांस्कृति राजस्थान, सम्पादन रतनशाह, 1989 पृ 158
5. सांस्कृति राजस्थान, सम्पादन रतनशाह, 1989 पृ 159
6. सांस्कृति राजस्थान, सम्पादन रतनशाह, 1989 पृ 159
7. सांस्कृति राजस्थान, सम्पादन रतनशाह, 1989 पृ 159
8. सांस्कृति राजस्थान, सम्पादन रतनशाह, 1989 पृ 159